प्रातःक्लास 9.4.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। परमपिता शिव भगवानुवाचः मीठे– बच्चों को पुरुषोत्तम संगमयुग कदम–2 पर याद रहना चाहिए। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो, सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह भी बुद्धि में याद रहे हम अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर बाप से पुरुषोत्तम बन रहे हैं। और यह जो रावण का पिंजड़ा है सारा उससे बाबा छुटकाड़ा(रा) दिलाने आये हैं। जैसे कोई पक्षी को पिंजड़े से निकाला जाता है तो वह बहुत खुश हो, उड़कर सुख पाते हैं। तुम बच्चे भी जानते हो यह रावण का पिंजड़ा है। अनेक प्रकार के दुःख ही दुःख हैं। अभी बाप आये हैं इन पिंजड़े से निकालने। हैं तो मनुष्य ही। शास्त्रों में तो लिख दिया है देवताओं और असुरों की लड़ाई लगी, फिर देवताओं ने जीता। अभी लड़ाई की तो बात है नहीं। तुम अभी असुर से देवता बन रहे हो। आसुरी रावण अर्थात् 5 विकारों पर तुम जीत पहनते हो न कि रावण सम्प्रदाय पर। 5विकारों को ही रावण कहा जाता है। बाकी किसको जलाने आदि की बात नहीं है। तुम बच्चे बड़े खुश होते हो अभी हम वहां ऐसी दुनियां मे जा रहे हैं जहां न गर्मी, न सर्दी होती है। सदैव बसंत ऋतु ही होती है। सतयुग स्वर्गीय बंसत ऋतु अभी आता है। वह ऋतु तो हर 22 मास बाद आती है। यह बसंत ऋतु तुम्हारे लिए आधा कल्प लिए आती है। वहां गर्मी आदि होती नहीं। गर्मी से भी मनुष्यों को दुःख होता है। मर पड़ते हैं। फिर बहुत ठंडी में भी मर पड़ते हैं। इन सभी दुःख(ीं) की बातों से छूटने लिए तुमको अविनाशी सर्जन बहुत ही सहज दवाई देते हैं। उस सर्जन के पास जावेंगे तो अनेक दवाईय(ाँ) आदि याद आवेंग(ी)। यहां इस सर्जन के पास तो कोई दवाई नहीं। उनको सिर्फ़ याद करने से सभी रोग छूट जाते हैं। और दवाई आदि कुछ भी है नहीं । बच्चे कहते थे आज सेमीनार करेंगे। चार्ट कैसे लिखना चाहिए, बाबा को कैसे याद करना चाहिए इस पर सेमीनार करेंगे। अभी बाप तो तकलीफ़ नहीं देते हैं कि बैठकर लिखो। काग़ज़ खराब करो। ज़रूरत ही नहीं रहती। बाप तो सिर्फ़ कहते हैं बुद्धि में सिर्फ़ याद रखो। अज्ञान काल में बाप को याद करने लिए चार्ट बनाया जाता है क्या? इसमें लिखा–पढ़ी करने की कोई बात ही नहीं। बाप को कहते हैं बाबा हम आपको भूल जाते हैं। कोई सुने तो क्या क(हें)गे? कहते भी हैं हम जीते जी बाप के बने हैं। क्यों बने हो? बाप से विश्व की बादशाही का वर्सा लेने। फिर ऐसे बाप को तुम भूलते क्यों हो? ऐसे बाप जिससे इतना भारी वर्सा मिलता है उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। इतना बार तुमने वर्सा लिया है फिर भूल जाते हो। बाप से वर्सा भी लेना है तो याद भी करना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। लिखना क्या है यह तो हरेक अपने दिल से पूछे। नारद का भी अभी का ही मिसाल है। खुद कहते हैं बड़ा भक्त है। बाप कहते हैं किस किसम का बड़ा भक्त है? तुम भी जानते हो हम जन्म–जन्मांतर के भक्त हैं। हम मीठे बाप को याद कर कितना खुश होते हैं। जो जितना याद करते हैं वही ल.ना. को वरने लायक बनते हैं। कोई ग़रीब का बच्चा जाकर साहूकार की गोद लेता है तो कितना खुश होता है। बाप को और प्राप्र्टी(प्रापर्टी) को ही याद करना है। यहां तो बहुत हैं जिनको बेहद के बाप का बच्चा बन राजाई लेने का भी अक़्ल नहीं है। अक़्ल आता ही नहीं। वण्डरफुल बात है। जो बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं उनको याद नहीं कर सकते हैं। बाप बच्चों को एडॉप्ट करते हैं। एडॉप्टेड बाप को याद न करना यह तो वण्डरफुल बात है। घड़ी–2 बाप और प्राप्र्टी(प्रापर्टी) याद आनी चाहिए। बाप कहते हैं मीठे–2 सिकीलधे बच्चों तुमने बुलाया ही है एडाप्ट करने लिए। बाप को बुलाया जाता है ना। बाप ही स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं। स्वर्ग़ का वर्सा देते हैं। तुम पुकारते हो बाबा आकर हम पतितों को गोद में लो। आपे ही कहते हो हम पतित, कंगाल हैं, छी–2, डर्टी, वर्थ नॉट अपेनी हैं। बेहद के बाप को तुम भक्तिमार्ग में पुकारते हो। अभी बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में भी तुमको इतना दुःख नहीं था। अभी तो कितना दुःख है। बाप आया है तो ज़रूर विनाश का भी समय होगा ना। तुम जानते हो इस लड़ाई, विनाश के बाद फिर कितने जन्म, कितने वर्ष लड़ाई का नाम नहीं रहेगा। कभी भी लड़ाई नहीं, न कोई दुःख आदि का नाम ही होगा। अभी तो कितनी ढेर

बीमारियां हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चों हम तुमको सभी दुःखों से छुड़ा देंगे। तुम याद ही करते है हे भगवान आकर दुःख हरो, सुख–शान्ति दो। यह दो। चीज़ ही हरेक मांगते हैं। यहां है शान्ति। शांति की जो राय देते हैं उन्हों को प्राइज़ मिलती है। बिचारों को मालूम नहीं शान्ति किसको कहा जाता है। शान्ति तो सिवाय मीठे बाप के और कोई द्वारा मिल न सके। कितनी मेहनत तुम करते हो समझाने की। फिर भी समझते नहीं हैं। तुम गवर्मेन्ट को भी लिख सकते हो मुफ्त क्यों पैसे बरबाद करते हो? शान्ति का सागर तो एक ही बाप है। वही विश्व में शान्ति स्थापन करते हैं। गवर्मेन्ट को हैण्ड्स को अच्छे–2 कागज़ पर चिट्ठी लिखनी चाहिए। कोई अच्छा कागज़ देखकर भी समझते हैं कि शायद यह किसी बड़े आदमी की चिट्ठी है। बोलो, विश्व में शान्ति जो तुम कहते हो। आगे कब हुई थी? जो फिर उस प्रकार मिले। ज़रूर कब मिली होगी। तु(म)को मालूम है शान्ति मिली थी या शान्ति स्थापन हुई थी। कब और किस द्वारा? तुम बच्चों को मालूम है। तुम ति(ि)थि, तारीख सब लिख सकते हो। बाप ने ही आकर विश्व में शान्ति स्थापन किया था। वह सतयुग का समय था। यह ल.ना. है डिनायस्टी के निशानी। ब्रह्मा और तुम ब्राह्मणों के पार्ट का किसको भी पता नहीं है। मुख्य पार्ट तो ब्रह्मा का है ना। वही रथ बनते हैं। जिस रथ द्वारा बाप इतना कार्य करते हैं। नाम ही है पदमा पदम भाग्यशाली रथ। विचार करो कैसे किसको समझावें? मनुष्यो को कितना नशा है। हू बहू जैसे बन्दरों मिसल हैं। बन्द(रों) को बहुत अपना नशा रहता है। हाथी को देखेंगे तो भी गुरर–गुरर करेंगे। अभी तो तुमको बाप का ही परिचय देना है। बाप को रचना का ज्ञान है। दुनियां तो बिल्कुल कुछ नहीं जानती। भक्तिमार्ग का नाचना, गाना आदि ही सिर्फ़ जानते हैं। बाकी कुछ है नहीं। ज्ञान तो है ही सिर्फ़ ज्ञान सागर पास। वह जब आवें तब आकर देवें। तब तक ज्ञान तो कोई दे न सके। भक्त सभी भक्ति ही करते हैं। ज्ञान तो एक ही बाप देते हैं। बाकी सभी है भक्तिमार्ग की सामग्री। इनमें ज्ञान नहीं है। यह कोई ज्ञान की पुस्तक नहीं। गीता ज्ञान का पुस्तक नहीं है। ज्ञान का पुस्तक स्थाई बनता नहीं। ज्ञान तो कानों से ही सुनना होता है। यह किताब आ(ज) जो तुम रखते हो यह सभी टेम्परेरी है। यह भी सभी खत्म हो जावेंगे। तुम नोट लिखते हो यह भी खत्म हो जानी है। यह सिर्फ़ अपने पुरुषार्थ के लिए बाप कहते हैं टॉपिक्स की लिस्ट बनाओ तो याद आवेगा; परन्तु यह तो जानते हो यह पुस्तक आदि कुछ भी नहीं रहेगी। तुम्हारी बुद्धि सिर्फ़ याद ही चल पड़ेगी। पुस्तक आदि कुछ नही रहेगी। आत्मा बिल्कुल बाप जैसे भरपूर हो जाती है। बाकी जो भी पुरानी चीज़ इन आँखों से देखते वह सभी चला जावेगा। पिछाड़ी में कुछ भी रहने की दरकार ही नहीं। मनुष्य शास्त्रों को कितना ....हैं। चित्रों के कितनी (परिक्रमा) दिलाते हैं वास्तव में ऊँच ते ऊँच शिवबाबा। परिक्रमा तो इनको ही दिला(ना) चाहिए। वह लोग शास्त्र आदि उठाते हैं। जिनसे तुम पतित बने हो। इनको बैठ परिक्रमा दिलाते हैं। क्या–2 (करते) रहते हैं। बाप है अविनाशी सर्जन। आत्मा भी अविनाशी है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। दिन–प्रतिदिन तो भी शरीर मिलता है छी–2 भ्रष्टाचार से। अभी तुम बच्चे जानते हो श्रेष्ठाचारी बन रहे हो। बाप ही बनाते हैं। साधु संत आदि थोड़े ही बनाते हैं। बाप तुमको श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। अपने नयनों पर बिठाकर ले जावेंगे। आत्मा भी यहां नयनों पर बैठी है ना। बाप कहते हैं हे आत्माएं तुम सभी को ले जाऊँगा। बाकी थोड़ा समय है अभी मेहनत करो। अपने दिल से पूछो मैं स्वीट बाबा को कितना समय याद करता हूं? हीरा–राझूं का बहुत पढ़ा है। इन्हों का विकार के लिए लव नहीं था। शरीर का प्यार था। याद करते और साम(ने) खड़ा हो जाता था। दोनों आपस में मिल जाते थे। बाप कहते हैं तुम भी ऐसे बनो। वह है एक जन्म के (आशुक)–माशुक। तुम हो जन्म–जन्मांतर के। यह बातें भी इस समय होती हैं। आशुक–माशुक अक्षर भी स्वर्ग में नहीं है। वह भी पवित्र रहते हैं। मंसा में खराबी नहीं आती। सामने देखा और खुश हुये। तुम बच्चों को देखने (की) तो कोई चीज़ ही नहीं। इस समय तुम सिर्फ़ अपन को आत्मा समझो और माशुक को याद करो। आत्मा

समझ बाप को बहुत खुशी से याद करना है। बाप समझाते रहते हैं भक्तिमार्ग में तुम ऐसे आशुक थे। ऐसे माशुक पर कुर्बान जाते थे। आप आवेंगे तो हे माशुक, आप पर वारी जावेंगे। अभी माशुक आया हुआ है सभी को गोरा बनाते हैं। माशुक देखो कैसा बनाते हैं। जो जैसा है वैसा बनाने की कोशिश करते हैं। तुम गोरा बनते हो तो शरीर भी गोरा बनेगा। आत्मा में ही खाद पड़ती है। मुझे याद करो तो खाद निकल जावेगी। यहां तुम बच्चे आते हो। यहां तो एकान्त बहुत अच्छी है। पादरी लोग भी आते हैं पैदल करने। एकदम सायलेन्स में रहते हैं। माला हाथ में रहती है। कोई का देखते भी नहीं हैं। धीरे–2 चले जाते हैं। वह लोग क्राइस्ट को याद करते होंगे। बाप को जानते ही नहीं। स्थूल को ही याद करते हैं। मेरे लिए तो कह देते नाम–रूप ही नहीं। नाम–रूप से न्यारा है। अभी बिन्दी देखो क्या है? बिन्दी को कैसे याद करें? किसको पता भी (नहीं)। तुमको अभी मालूम पड़ा है तो तुम यहां आते हो। मधुबन का तो गायन है यह है सच्चा मधुबन। तो जितना हो सके एकान्त में ही याद में रहो। किसको देखो भी नहीं। ऊपर तो कोठे तो बने हैं। बाबा की याद में सवेरे कोठे पर चले जाओ। बड़ा मज़ा आवेगा। कोशिश करो रात को एक बजे, दो बजे जागने की। तुम नींद को जीतने वाले मशहूर हो। सवेरे सो जाओ फिर एक/दो बजे उठकर कोठे पर एकान्त में याद की यात्रा करते रहो। बहुत जमा करना है। बाप को याद करने, बाप की महिमा करने लग जाओ। आपस में भी बहुत राय करते रहो। बाप कितना मीठा है, उनको याद करने से ही पाप कटेंगे। यहां बहुत जमा कर सकते हैं। यह वान्स(चान्स) भी यहां ही अच्छा मिलता है। घर में तुम कर न सकेंगे। फुर्सत ही कहां रहती है। दुनियां की वायब्रेशन, वातावरण बहुत खराब रहती है। वहां इतनी (याद) की यात्रा नहीं होगी। यहां बहुत अच्छा चांस है। अभी इसमें लिखने की भी क्या बात (है)? आशुक–माशुक लिखते हैं क्या? अन्दर में देखो (हमने) किसको दुःख तो नहीं दिया। कितने को याद दिलाया। यहां हम आते ही हैं जमा करने। तो यहां तो कोशिश करो। बाबा ने कोठे आदि तो इसलिए ही बनाये हैं। बच्चे ऊपर में एकान्त में जाकर बैठे ख़जाना जमा करो। यह समय है जमा करने का। सात रोज़, पांच रोज़ आते हो मुरली सुनने। जाकर एकान्त में बैठो। यहां तो घर में बैठे हो। बाबा को कहो तो बाबा दो बजे भी जा जावेंगे। यह तो ओबिडियन्ट सर्वेन्ट है। आकर के तुमको याद की यात्रा करावेंगे। बच्चे ऐसे बाप को याद करो। तुम्हारा कुछ जमा तो हो जाये। बहुत माताएं बांधेली हैं, बहुत याद करती हैं। शिवबाबा बन्धनों से छुड़ाओ। बांधेलियां और ही तुमसे जास्ती याद में रहती हैं। घड़ी–2 आँखों से आँसू बहते रहते हैं। बाबा इन बन्धनों से छुड़ाओ। विकार के लिए कितना मारते हैं। खेन(ल) दिखाया है ना द्रौपदी के चीड़(र) हरे। तुम सभी द्रौपदियां हो। तो बाप को ही याद करते रहना है। बाबा युक्तियां तो बहुत बतलाते रहते हैं। बाबा तो कभी भी आ जावेगा। बाबा रथ को उठाकर तैयार कर देंगे। इसमें स्नान की भी बात नहीं रहती। मनुष्य तो स्नान करने समय भी किसी देवता या भगवान को याद करते रहते हैं। पाख़ाना में भी याद कर सकते हैं। मुख्य बात है ही याद की। ज्ञान तो बहुत मिला हुआ है। 84 के चक्र का ज्ञान है। अपने अन्दर में बैठ देखो। अपने से पूछो ऐसा मीठा बाप जो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं उनको सारे दिन में कितना याद किया। मन भागता तो नहीं। कहां भागेगा? दुनियां तो है नहीं। यह भी सब ख़तम हो जाना है। हम और बाप ही रहने वाले हैं। ऐसे–2 अन्दर में बातें करो तो फिर बहुत मज़ा आवेगा। यहां जो आते हैं वह हैं बहुत पुराने भक्त। जो नहीं आते हैं वह समझो आजकल के भक्त हैं। वह देरी से आवेंगे। शुरू से भक्ति करने वाले ज़रूर आवेंगे बाप से वर्सा पाने। हिसाब–किताब है ना। जिसको चटक लग जाती है समझो यह शिवबाबा का पुराना भक्त है। यह गुप्त मेहनत है। जो धारणा नहीं करते हैं उनसे कुछ भी मेहनत पहुंचती नहीं। यहां तुम आते ही हो रिफ्रेश होने। तो बाप समझाते हैं ऐसे–2 करो। घूमने भल जाओ। सर्विसएबुल सर्विसएबुल के साथ ही जावेंगे। अन्तरमुख हो चक्र लगाओ। अपनी अवस्था को देखते रहो। जैसे वह

लोग क्राइस्ट को याद करते हैं। तुम भी पादरी हो। पवित्र हो ना। सफेदपोश भी हो। तो अपने से मेहनत करो। तुमको सभी मालूम पड़ेगा हम कालेपन से कितना (गोरे) बन रहे हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बने हैं। बाहर में तो सारा दिन धंधे आदि में ही फंसे रहते हैं। यहां तो तुमको बहुत अच्छा मौका है। एक हप्ते में तुम इतना माल इकट्ठा कर सकते हो जो वहां 6 मास ,12 मास में भी इकट्ठा नहीं कर सकेंगे। यहां सात रोज़ में वही सारी कसर निकाल सकते हैं। बाबा राय देते हैं ज़रूर खुद करता होगा। बाबा इन द्वारा राय देते हैं। पहले तो इनकी कान सुनती है। रात को टांग टांग पर चढ़ा कर खटियों पर सोये हुये भी याद कर सकते हो। ऐसे नहीं बैठ कर याद करना है। टेव पड़ जावेगी तो बहुत खुशी होगी। बाबा हमको विषय सागर से निकाल क्षीर सागर में ले जाते हैं। विकारों से तो जैसे बास आती है। छूने की भी दिल नहीं होती। मूत पीते हैं ना। तुम्हारा इस पर गीत भी है साधु–संत–महात्मा यह अक्षर बे माना..... .. मेहतर उनसे बेहतर जो खाते मेहनत का खाना। वह तो मुफ़्त का खाते हैं। फायदे बदली नुकसान ही होता है। हम गिरते ही जाते। वह सभी झूठी बातें ही सुनाते हैं। कितनी ग्लानी लगी पड़ी है। रामायण भगवद आदि सभी में ग्लानी। वह है कनरस। यह तो आत्मा को खजाना मिलता है। आत्मा बड़ी खुश होती है। आत्मा जानती है बाबा को याद करने से हम यहां से उड़ जावेंगे। ऐसे–2 अपने से बातें–लातें करो। आठ घंटा गवर्मेन्ट के सर्विस में दो। धंधे वाले तो फ्री हैं, जो चाहे सो करें। व्यापारी लो(ग) फ्री होते हैं। जब कहां जाना चाहें जावें। गमर्मेन्ट के नौकर तो बन्धन में रहते हैं। बाबा कहते हैं व्यापारियों का पकड़ो। वह व्यापार जाने। मैं भी तुमसे व्यापार करने आता हूं ना। करनीघोर भी हूं तुम्हारा पुराना लेकर क्या देता हूं? यह रिवाज़ भी यहां से ही निकला है। देते हैं दूसरे जन्म में लेने लिए। वह है इनडायरैक्ट यह है डायरैक्ट। मैं अभी डायरैक्ट आया हूं। तुम बाबा के पास किसलिए आये हो? विश्व के मालिक बनने के लिए। जानते हो यह सभी ख़त्म हो जाने वाले हैं। बाबा लिखते ही हैं पदमभाग्यशाली। कब लिखते हैं पदमापदम भाग्यशाली। नम्बरवार तो हैं ना। बाबा जानते हैं जो बच्चे बहुत अच्छी मेहनत करते हैं ,बहुतों का कल्याण करते हैं उन्हों को प्राइज़ भी ऐसी मिलती है। सारा विश्व का राज–भाग उन्हों को ही मिलता है। तो ऐसे बाप को दिल में याद रखना चाहिए ना। इसमें भाकी आदि की भी कोई बात नहीं। यह तो पुराना पतित शरीर है ना। भाकी को याद नहीं कहा जाता है। उनको कहा जाता है बाप और बच्चे का सम्मुख मिलन। बच्चे बाप के आगे बैठे हैं। ज्ञान देने वाली भी आत्मा है। लेने वाली भी आत्मा ही है। आत्मा ही सभी कुछ करती है। बैरिस्टरी भी आत्मा ही करती है। कर्म आत्मा करती है शरीर द्वारा। बाप बच्चों को देहीअभिमानी बनाते हैं। तुम जानते हो इस समय तुमको नाम–रूप से न्यारा होना है। सतयुग में यह शिक्षा मिलती नहीं। यह शिक्षा ज़रूर संगम पर ही मिलती है। फिर आधा कल्प तुम प्रारब्ध भोगते हो। भक्ति और ज्ञान है ना। ज्ञान से आधा कल्प तुमको सुख मिलता है। अभी बाप भक्ति से छुड़ाते हैं। आधा कल्प भक्ति होती ही नहीं। सतयुग में है सुख। कलयुग में दुःख है। वह फुल सुख फिर सेमी। यहां फिर पहले सेमी दुःख फिर फुल दुःख होता है। सेमी दुःख है जब अव्यभिचारी भक्ति है। फिर व्यभिचारी बनती है तो फुल दुःख होता है। यहां तो सिर्फ़ बाप को याद करना है। रात–दिन का फ़र्क है। तुम्हारे लिए आधा कल्प दिन बन जाता है। ब्राह्मण(ों) का दिन गाया जाता है। फिर आधा कल्प है रात। ब्राह्मण(ों) का दिन और रात। अभी तुम हो संगम पर। भगवानुवाच है न कि कृष्ण भ. । यह कृष्ण तो बुद्धू है। कृष्ण ही बड़ा होकर फिर ना. बनते हैं। यह (ना.) भी भूटू है। इनको और रचना का ज्ञान नहीं है। (पवित्र बुधू(द्धि) है) । तुम तो ईश्वर के बच्चे हो। यह नहीं है। तुमको सारा ज्ञान है। स्वर्ग के जो मालिक हैं उनको ..... नहीं है। वह भूल जाते हैं। कितनी मीठी बाते हैं। तुम पदमापदम भाग्शाली हो। बाप डिप(सो)मेट तो है ही। सर्विसएबुल ही याद पड़ेंगे। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को गुडमॉर्निंग नमस्ते।

स्वर्ग की बादशाही याद है?